

मानव सभ्यता इस दुनिया को अपने लिए बेहतर बनाने के लिए प्रयत्नशील रही है । ऐसे प्रयत्न करने वालों के सामने भविष्य की दुनिया का एक सपना होता है । कलाएं हमें सपने रचने में मदद करती हैं । यह कविता भी सपनों की दुनिया का वृतांत प्रस्तुत करती है । अजन्मा शिशु आगत पीढ़ी का प्रतीक है । हमने इसे विश्व कविताओं के अनूदित संकलन 'देशान्तर' से लिया है जिसका संपादन धर्मवीर भारती ने किया है । मूल कविता अंग्रेजी में है, हिन्दी रूपान्तर धर्मवीर भारती ही ने किया है ।

### अजन्मे शिशु की प्रार्थना

#### □ लुइस मैक्नीश

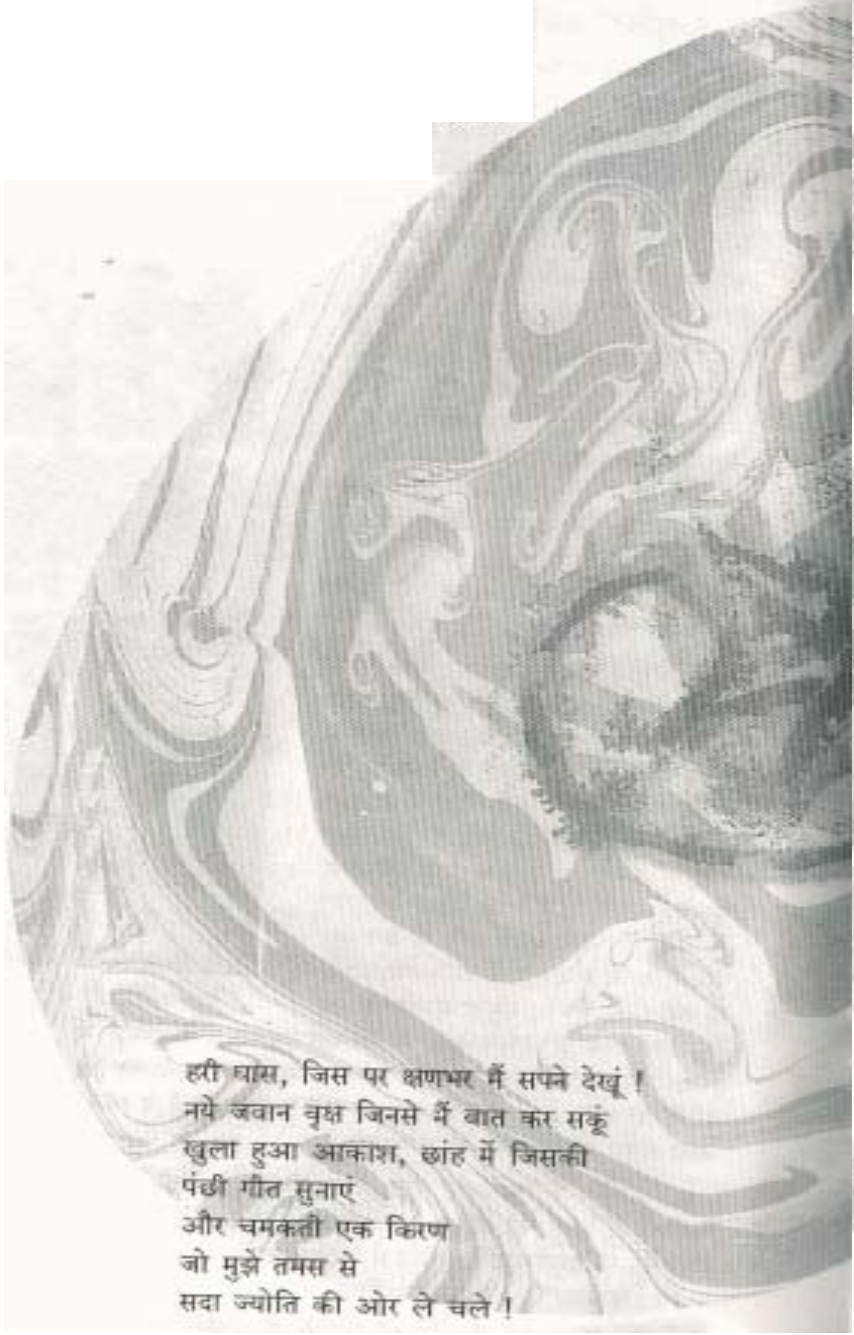
अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !  
सुनो, ओ सुनो शर्ते मेरी,  
जिनके बिना न मैं  
इस धरती पर आऊंगा

खून चूसने वाले ये चमगादड, चूहे,  
कब्र खोदनेवाली नरभक्षी छायाएं  
कतई मेरे पास न आयें !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !  
मुझको दो आश्वासन, दो आश्वासन मुझको  
जिसके बिना न मैं इस धरती पर आऊंगा !  
मुझको भय है  
तथाकथित यह मानव नामक जाति  
ऊंची दीवारों के अंदर मुझे करेगी कैद  
चालाकी से भरे असत्यों से  
मुझको विचलित कर देगी !

सोने की मदिरा से बदहवास कर देगी  
काले कठिन शिकंजों में मुझको कस देगी  
खून से सने मैदानों में  
कर देगी मेरी सैनिक हत्या !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म,  
मेरे लिये प्रबंध करो ताजे पानी का  
जिसमें धुलकर मेरी आत्मा स्वच्छ बनेगी



हरी घास, जिस पर क्षणभर मैं सपने देखूं !  
नये जवान वृक्ष जिनसे मैं बात कर सकूं  
खुला हुआ आकाश, छांह में जिसकी  
पंछी गीत सुनाएं  
और चमकती एक किरण  
जो मुझे तमस से  
सदा ज्योति की ओर ले चले !



अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !  
किन्तु अभी से मुझे क्षमा दो  
उन पापों के लिए जिन्हें मेरे माध्यम से  
कायर दुनिया किया करेगी !  
वे विचार, वह वाणी जो मेरे माध्यम से  
दुनिया सोचेगी, अथवा दुनिया बोलेगी

मुझे क्षमा कर दो  
उस जीवन के लिए  
जो कि अपनी हत्या करने के बाद  
मुझे जीना ही होगा !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !  
किन्तु मुझे अभ्यास करा दो  
उस अभिनय का, जो मुझको करना ही होगा !  
उस धीरज का,  
जो उस समय शक्ति दे मुझको

जब बूढ़े मुझ पर अनुचित उपदेश उंडेले,  
जब सत्ताएं मेरी गति में बाधा डालें  
जब ऊंचे पहाड़ मेरी किस्मत पर टूटें  
जब उत्ताल तरंगों मुझको आमंत्रण दें  
जब मृगतृष्णाएँ मुझको दर दर भटकार्यें  
जब मेरी ही सन्तानें  
चिढ़कर मुझ पर लानत भेजें !

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !  
सुनो पर !  
जो पशु है या जो अपने को खुदा समझता है  
ऐसे को मेरे पास फटकने मत दो

अभी नहीं मैं ले पाया हूँ जन्म !  
लेकिन मुझमें भर दो इतनी ताकत जिससे  
मैं विद्रोह कर सकूँ उससे-

जो मेरी मानवता को काले पत्थर में बदल रहा हो  
जो मुझको मशीन का पुर्जा बना रहा हो  
जो मेरा व्यक्तित्व कुचलने को आतुर हो  
जो मेरी पूर्णता धूल में मिला रहा हो  
जो मुझको मुर्दा पत्ते की तरह  
वहां से यहां, यहां से वहां उड़ा ले जाना चाहे !

मुझको पूरा मौका दो  
अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकूँ  
मैं अपना हक अदा कर सकूँ  
सड़ी लाश-सा भूखे गिद्धों से खाये जाने के पहले  
वरना मेरा गला दाब दो  
धरती पर लाने के पहले ◆